'देश में सिनेमा साक्षरता की आवश्यकता है'

जनसत्ता संवाददाता 16/3/23 p.5
नई दिल्ली, 15 मार्च।

साहित्य अकादेमी के छह दिवसीय साहित्योत्सव के पांचवें दिन सिनेमा और साहित्य परिचर्चा के मुख्य अतिथि गीतकार एवं लेखक वैरमुत्तु थे। इसमें रत्नोत्तमा सेन गुप्ता की अध्यक्षता में अजय ब्रह्मात्मज, विनोद भारद्वाज, अजित राय और प्रदीप सरदाना शामिल हुए। रत्नोत्तमा सेनगुप्ता ने कहा कि देश में अभी सिनेमा साक्षरता की आवश्यकता है। इसके बेहतर होने पर ही साहित्य और सिनेमा के रिश्तों में सुधार और बदलाव आएगा।

'मीडिया, न्यू मीडिया और साहित्य' विषय की परिचर्चा का उद्घाटन वक्तव्य वेद प्रताप वैदिक को देना था। उनके निधन के कारण माहौल शोकमय रहा। सभी ने उन्हें श्रद्धांजलि दी और आलोक मेहता की अध्यक्षता में सईद अंसारी, अंकुर डेका, प्रभात रंजन, बालेंदु शर्मा दाधीच ने अपने विचार रखे। द्वितीय सत्र में इरफान, ओंकारेश्वर पांडेय, शेखर जोशी एवं मा शर्मा ने अपने विचार रखे। सभी का मानना था कि न्यू मीडिया से संपर्क और संचार के नए रास्ते खुले हैं, लेकिन उसमें विषय की विश्वनीयता को परखने के लिए कोई उचित मापदंड न होने के कारण अर्थ का अनर्थ होने की संभावना भी बनी रहती है।

डिजिटल दुनिया में प्रकाशन विषयक परिचर्चा का उद्घाटन प्रकाशक अशोक घोष ने किया, जिसमें रमेश के मित्तल एवं निर्मलकांति भट्टाचार्जी ने दो सत्रों की अध्यक्षता की। 'कथासंधि' कार्यक्रम में उर्दू कथाकार अब्दुस समद से बातचीत की गई। उन्होंने अपनी कहानी 'दीवार पर लिखी तहरीर' प्रस्तुत की और उसकी सृजनात्मक यात्रा का विवरण दिया। इंडो-कजाक लेखक सम्मिलन में अकाबेरेन येलबेजेक, अलमाज अमिरबेकुली मइर्जाखमेत, नुरलन सरसेनबियुली इस्साबेकोव, तानाकोज तोलीनोवना तथा उलाइबेक ओराजबायुली येसदौलेत एवं भारतीय लेखक शामिल हुए।